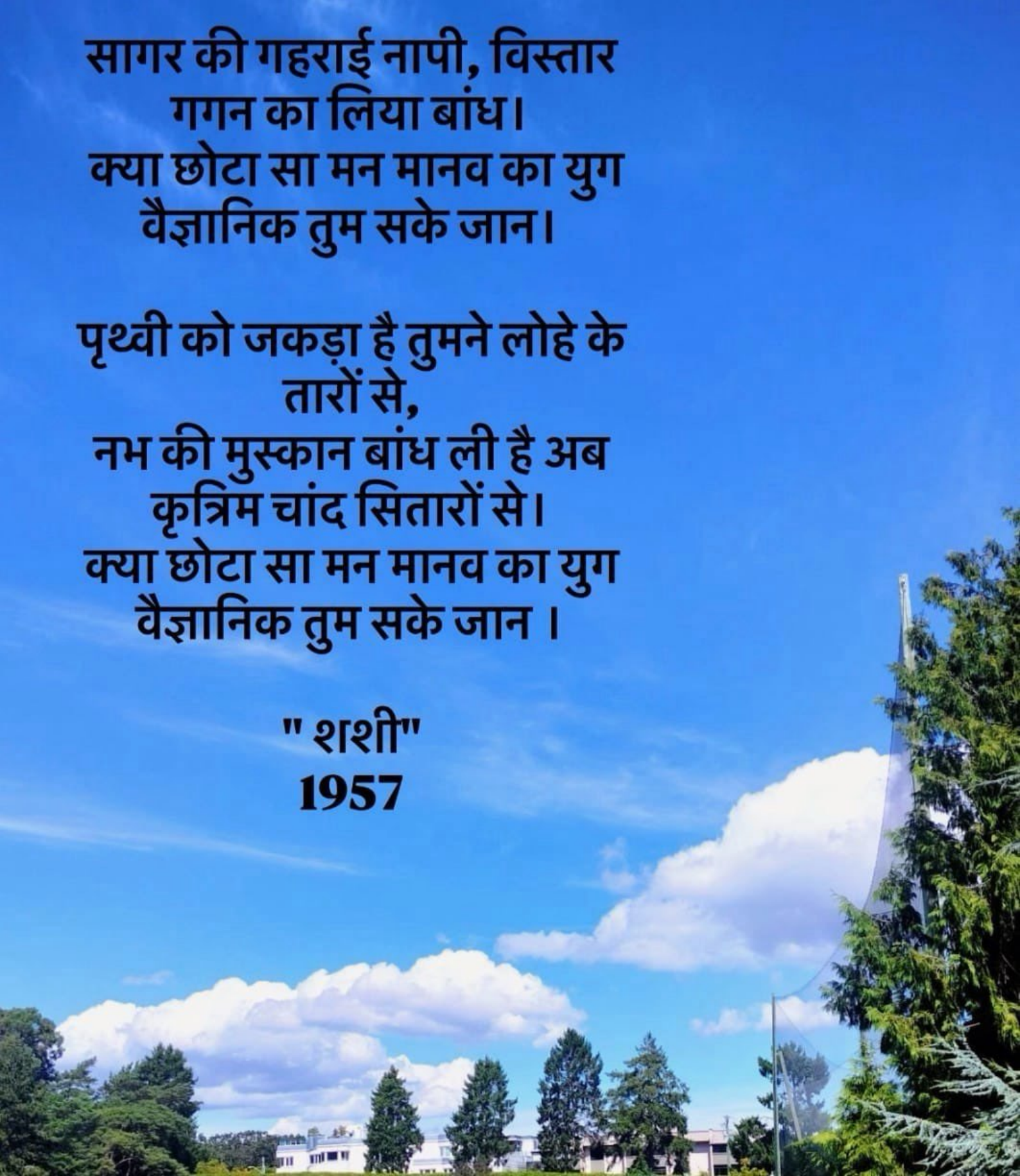

सागर की गहराई नापी, विस्तार
गगन का लिया बांध।
क्या छोटा सा मन मानव का युग
वैज्ञानिक तुम सके जान।

पृथ्वी को जकड़ा है तुमने लोहे के
तारों से,
नभ की मुस्कान बांध ली है अब
कृत्रिम चांद सितारों से।
क्या छोटा सा मन मानव का युग
वैज्ञानिक तुम सके जान ।

" शशी"
1957